जमींदारों का कहर

कुसहा महिषी दक्षिणी पंचायत के तटबंध के अंदर का एक गांव है। यहां बेलदार, पासवान, तीयर, शर्मा जाति के लोग रहते है। यहां कुल 56 परिवार रहते है। प्रतिवर्ष कोशी की बाढ़ से यहां के लोग प्रभावित होते रहते है। प्रतिवर्ष जमीन भरकर मकान बनाना इनका एक आवश्यक कार्य हैं हर वर्ष बाढ़ के आने के कारण कुछ न कुछ परिवार काशेी में विलीन होता रहता है। कुसहा वासी शत् प्रतिशत भूमिहीन है। कुसहा की आबादी लगभग 300 है। सभी लोग काफी मिहनती है। रबी की खेती यहाँ अच्छी होती है। कोशी नदी के तट से 500 मी0 पश्चिम में कुसहा अबस्थित हैं तटबंध के अंदर इस गांव के अवस्थित होने के कारण यहां मच्छर बाहर की अपेक्षा कम लगता है।

विकास के नाम पर सरकारी सुविधा का नाम की कोई चीज नहीं है। यहां के लोग बिल्कुल ही भोले भाले है एवं सहृदयी है। सड़क, बिजली, संचार सुविधा, शिक्षा स्वास्थ्य नाम की कोई सुविधा नहीं है। आदिम मानव के तरह जीवन जीने के लिए मजबूर है।

यहाँ पहले आबादी नहीं बसती थी। 1940 केबाद यहां लोग बसने लगे। जमींदार अपने–अपने जमीन में बसाए, यहां गणेश मिश्र का जमीन था उसी में लोग बसे। षुरू में घनघोर जंगल था लोग नदी का पानी ही पीते थे। 1952 से तटबंध निर्माण के बाद ये दो तटबंधों के बीच कैद कर दिए गए।

मेघ पाईन अभियान का यह कार्यक्षेत्र 2007 से ही रहा है। कार्यकर्ता गांव जाते और लोगों को शुद्ध पेयजल के बारे में बताते है। यहाँ सामूदायिक स्तर पर सेड लगाया गया लोगों ने वर्शा पानी पीया। कुछ लोग व्यक्तिगत स्तर पर पन्नी टांगकर वर्षा जल पीया।

प्रतिवर्ष बाढ़ के प्रकोप से कुछ न कुछ घर विस्थापित होता है। 2008 में 5 घर 2009 की बाढ़ में 13 घर विस्थापित हुआ। कार्यकर्त्ता उपप्रमुख की मदद से अंचलाधिकारी महिषी के द्वारा पन्नी, चूड़ा, कम्बल, गेहूं, चावल एवं 2250 रू0 नगद दिलवाया। 2010 के कोशी की विभीषका में पूरा कुसहा विस्थापित हो गया। कोशी की तेजधारा ने यहां का नामोनिशान समाप्त कर दिया।

गांव के बगल में बीरबांध गुजड़ती है जो काफी लम्बा एवं चौड़ा है। ग्रामीण वहां मकान बनाने का निर्णय लिया। मकान बनाने के साधन सामग्री की व्यवस्था किया। और बीरबांध पर मकान बनाने लगा।

महिषी के जमींदार जिनका वहॉ बासा है उसने तटबंध पर मकान बना रहे लोगों को बुलाया अपने कचहरी बासा पर ले गया और उससे पूछा कि तुम सड़क पर घर क्यों बना रहे हो यह कहते हुए उसे अपने कचहरी के मकान में बन्द कर दिया।

घर के लोग उन्हें खोजने लगे। पता चला कि लड्डू झा ने हमलोगों को अपने कचहरी के मकान में बन्द किए हुए हैं। गांव के लोगों की बैठक हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि इस आफत में हमलोग सरकारी जमीन (बांध) पर घर बना रहे थे। जिसके कारण लड्डू झा ने अपने कचहरी स्थित मकान में बंद कर दिया है हमलोगों को उनसे लोहा लेना होगा।

इस बात की भनक लड्डू झा को हो गई। वे किसी तरह जान बचाकर अपने घर महिषी भागे। आखिर कुछ लोगों ने बीरबांध पर घर बनाया तथा शेष लोग मालिक से जमीन खरीदकर मकान बनाए। कुसहा के लोगों का पेयजल का श्रोत चापाकल है। यहां के चापाकल में अधिक आयरन है।

अन्य जगहों की अपेक्षा यहां मजदूरों को कम मजदूरी दी जाती है। कर्ज महिषी के लोगों से लेते हैं। 3 महिना में कर्ज की अदायगी नहीं करने पर सवैया राशि चूकाना पड़ता है। यहाँ सस्ते दर पर दूध मिलती है। यहां के बच्चे भी बाहर काम करने के लिए जाते है। नदी पार कर महिषी आना पड़ता है बदले में साली देना पड़ता है। बरसात के मौसम में अत्यधिक कठिनाई से शौचालय कमऱ भर पानी में जाकर या नाव से करते है।